

11-03-2002

## विशेषतायें परमात्म-देन हैं - इन्हें विश्व सेवा में अर्पण करो

आज ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर ब्रह्मा बाप और शिव बाप अपने विश्व के चारों ओर के श्रेष्ठ भाग्यवान ब्राह्मण कुल को बहुत-बहुत अरब-खरब बार दिव्य अलौकिक जन्म की मुबारक दे रहे हैं। साथ-साथ अति स्नेह के, दिल के प्यार के रूहानी पुष्पों से जन्म की बधाई दे रहे हैं। हर एक ब्राह्मण आत्मा की विशेषता देख-देख हर्षित हो रहे हैं। दिल ही दिल में गीत गा रहे हैं - वाह बच्चे वाह! आज के दिन अमृतवेले से सभी के दिल में यही खुशी की लहरें दिखाई दे रही हैं - वाह बाप का और हमारा अलौकिक जन्म! बाप भी सभी बच्चों की अमृतवेले से बधाइयों की मालायें देख-देख खुश हो रहे हैं। यह बर्थ डे सारे कल्प में इस संगमयुग में ही मनाते हैं। सतयुग में भी ऐसा अलौकिक जन्म दिन नहीं मनायेंगे। वहाँ भी ऐसा विचित्र जन्म दिन नहीं होगा, जो बाप और बच्चों का एक ही साथ जन्म हो। अब तक सुना है क्या कि बाप और बच्चे का जन्म एक दिन हुआ? लेकिन आज का दिन आप बच्चों का और बापदादा का जन्म एक दिन मना रहे हो। तो वाह-वाह! के गीत गा रहे हो ना!

आज बापदादा अमृतवेले एक माला बना रहे थे। कौन-सी माला? NDPS की फाइनल माला नहीं बना रहे थे जो आप सोचो हमारा नाम था, हमारा नाम था... लेकिन आज आदि से, स्थापना के समय से अब विनाश के समीप समय तक कौन-से, कौन-से बच्चे अमर भव के वरदानी रहे हैं! उन्हीं की माला बना रहे थे। यह भी ड्रामा अनुसार उन आत्माओं को ऊँचे-ते-ऊँचे भगवन के साथ सर्व चरित्र देखने, सुनने का श्रेष्ठ पार्ट है लेकिन वह कितने थोड़े हैं! आप सबका भी पार्ट है, क्यों? बापदादा ब्राह्मण वंशावली बना रहे हैं। इसलिए विश्व के हिसाब से जो भी ब्राह्मण आत्मायें हैं वह बहुत-

बहुत-बहुत भाग्यवान हैं, क्यों? कोटों में कोई की लाइन में और कोई में भी कोई, एक तरफ विश्व की कोटों आत्मायें, दूसरे तरफ आप हर एक ब्राह्मण एक हो। तो जन्म दिन पर बापदादा हर एक बच्चे को, कोई-कोई को नहीं सभी बच्चों की जन्मपत्री देख हर एक के विशेषताओं की मालायें गले में डाल रहे थे। आप सभी चाहे नये हैं, चाहे आदि के हैं, चाहे मध्य के हैं लेकिन विशेष हैं और विशेष रहेंगे ही। सारा कल्प विशेष रहेंगे। सारा कल्प विश्व की सर्व आत्माओं की आप श्रेष्ठ आत्माओं के ऊपर महानता की नज़र रहती है। तो आप हर एक अपनी विशेषताओं को जानते हो? अगर हाँ तो एक हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। उस विशेषताओं को क्या करते हो? जानते हो बहुत अच्छा, मानते हो बहुत अच्छा लेकिन उन विशेषताओं को क्या करते हो? (सेवा में लगाते हैं) और रीति से यूज़ तो नहीं करते ना? यह विशेषतायें परमात्म-देन हैं। परमात्म-देन सदा विश्व सेवा में अर्पण करनी है। विशेषतायें अगर निगेटिव रूप में यूज़ किया तो अभिमान का रूप बन जाता है क्योंकि ज्ञान में आने के बाद, ब्राह्मण जीवन में आने के बाद बाप द्वारा विशेषतायें बहुत प्राप्त होती हैं क्योंकि बाप का बनने से विशेषताओं के खजाने के अधिकारी बन जाते हो। एक दो विशेषतायें नहीं हैं, बहुत विशेषतायें हैं। जो यादगार में भी आपकी विशेषताओं का वर्णन है - ०६ कला सम्पन्न, तो सिर्फ ०६ नहीं हैं, ०६ माना सम्पूर्ण। सर्व गुण सम्पन्न। सम्पूर्ण निर्विकारिता का डिटेल है। कहने में आता है सम्पूर्ण निर्विकारी लेकिन सम्पूर्ण में कई डिटेल हैं। तो विशेषतायें तो बाप द्वारा हर ब्राह्मण को वर्से में प्राप्त होती ही हैं। लेकिन उन विशेषताओं को धारण करना और फिर सेवा में लगाना। मेरी यह विशेषता है, नहीं, परमात्म-देन है। परमात्म-देन समझने से विशेषता में परमात्म शक्तियाँ भर जाती हैं। मेरी कहने से अभिमान और अपमान दोनों का सामना करना पड़ता है। किसी भी प्रकार का अभिमान, चाहे ज्ञान का, चाहे योग का, चाहे सेवा का, चाहे बुद्धि का, चाहे कोई गुण का, जिसमें भी अभिमान होगा उसकी निशानी है - उसको अपमान बहुत जल्दी फील होगा।

तो विशेष आत्मायें हो अर्थात् परमात्म-देन के अधिकारी हो।

तो आज आप सभी बापदादा का बर्थ डे मनाने आये हो ना! और बापदादा आप सबका बर्थ डे मनाने आये हैं। आप तो सिर्फ बापदादा का बर्थ डे मनायेंगे लेकिन बापदादा सारे ब्राह्मण कुल का बर्थ डे मनाने आये हैं। चाहे देश में दूर बैठे हैं, चाहे विदेश के कोने में दूर में बैठे हैं लेकिन जो भी ब्राह्मण आत्मा, ब्राह्मण कुल की बन गई, उन सबका बर्थ डे बापदादा भी मना रहे हैं, आप भी मना रहे हैं। सबका मना रहे हो या सिर्फ यहाँ बैठने वालों का मना रहे हो? सभी याद हैं ना! सभी देख रहे हैं कि हमारा भी मना रहे हैं या नहीं? तो सबका मना रहे हैं। सबको मुबारक, मुबारक, मुबारक हो। मनाना अर्थात् उमंग-उत्साह में आना। तो दिल में उत्साह है ना, वाह! हमारा अलौकिक जन्म दिन!

तो आज अमृतवेले से जन्म दिन का उत्साह-उमंग सभी में बहुत-बहुत रहा ना! बापदादा ने कार्ड भी देखे, आप इन आंखों से देखते हो, बापदादा तो सूक्ष्म में ही आपसे पहले ही देख लेते हैं। लेकिन बापदादा ने देखा सभी अपने दिल का उमंग दिखाने के लिए कितना उमंग-उत्साह रखते हैं। आजकल तो ई-मेल बहुत सस्ता है ना! तो ई-मेल भी सभी बहुत करते हैं। बापदादा के पास सब पहुँचता है। चाहे ई-मेल हो, चाहे कार्ड हो, चाहे पत्र हो, चाहे दिल के संकल्प हों। अमृतवेले से वतन में अगर चारों ओर के कार्ड, पत्र, ई-मेल, संकल्प सब इकट्ठे करो तो देख-देखकर बड़ा मजा आयेगा। यह एग्जीविशन विचित्र होती है। तो बर्थ डे पर भविष्य के लिए संकल्प किया जाता है। जैसे बर्थ का नम्बर आगे बढ़ता है, ६७९ से ६६ पर गया ना! तो जैसे वर्ष आगे बढ़ता है ऐसे ही पुरुषार्थ में वा अपने अमूल्य जीवन में, मन में अर्थात् संकल्प में, बुद्धि के निर्णय शक्ति में, वाणी में, सेकण्ड में सफलता मूर्त बनाने की शक्ति में, सम्बन्ध-सम्पर्क में हर समय सम्पर्क-सम्बन्ध वाले को कोई-न-कोई प्राप्ति की अनुभूति हो, ऐसा अपने भविष्य वर्ष के लिए दृढ़ संकल्प का व्रत लिया? क्योंकि विशेष शिव जयन्ती के दिन दो लक्ष्य

ब्राह्मण आत्माओं के रहते हैं - एक स्वयं से प्रतिज्ञा का और दूसरा बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने का, यह दो विशेष लक्ष्य इस दिन हर एक के अन्दर रहता है। तो बापदादा ने आप सबकी की हुई प्रतिज्ञाओं का (जो बीते हुए समय में की हैं) पोतामेल देखा। हर साल हर एक ने विधिपूर्वक संकल्प से, वाणी से प्रतिज्ञा की है। बहुत अच्छा किया है। लेकिन अभी आज के बाद अर्थात् जन्म दिन मनाने के बाद एक शब्द को विशेष अण्डरलाइन करना। कामन शब्द है, नया नहीं है। वह शब्द है -निरन्तर दृढ़ता। कभी दृढ़ता और कभी दृढ़ता में भी अलबेलापन, नहीं। अगर निरन्तर दृढ़ता है तो उसकी निशानी है - निरन्तर हर संकल्प, बोल, कर्म द्वारा स्व में, सेवा में और सम्बन्ध में 100 परसेन्ट सफलता। जब तक इन सभी बातों में ब्राह्मणों में सदा सफलता कम है तब तक प्रत्यक्षता ड्रामा अनुसार रुकी हुई है। सफलता प्रत्यक्षता का आधार है। हर बोल सफलता पूर्वक हो, हर संकल्प सफलतापूर्वक हो। इसलिए आजकल के यादगार में भी गुरु कहलाने वालों को सत वचन महाराज कहा जाता है। चाहे झूठ भी बोल रहे हों लेकिन भक्त कहते हैं सत वचन। तो यह आपके वचन का गायन है। महाराज, महान तो आप ही बनते हो ना! इसीलिए सत वचन महाराज माना महान आत्मायें। ऐसे कभी नहीं सोचो कि मेरा भाव नहीं था लेकिन बोल दिया, निकल गया, बिना भाव के, भावना के बोल नहीं निकलते हैं, यह तो चलाने की बात है। कभी कहते हैं निकल गया, क्यों निकल गया? क्यों, कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है क्या जो निकल गया? हो गया, तो राजा नहीं हैं? कोई-कोई कर्मेन्द्रियों के वशीभूत हो गये ना - जो निकल गया, हो गया!

तो इस वर्ष में मुबारक के साथ निरन्तर हर बात में दृढ़ता को अण्डरलाइन करना। आज बर्थ डे है इसलिए बापदादा आज नहीं सुनाते हैं लेकिन सभी के चार्ट से बापदादा ने एक बात नोट की, लेकिन लास्ट बारी में सुनायेंगे। आज तो मनाना है, सुनाना नहीं है। 108 दिन के बाद सुनायेंगे। (बापदादा सुनाये तो 108 दिन में सब ठीक हो जायेंगे) अच्छा पहले कहो 108 दिन में करेक्शन हो जायेगी फिर तो सुनाना ठीक है। अगर 108 दिन में परिवर्तन हो जाए तो बापदादा तो पता नहीं क्या कर देंगे! तो सुनायें क्या? तो 108 दिन में

परिवर्तन हो जायेगा? संकल्प करेंगे? अच्छा, पाण्डव करेंगे सुनायें? सुनना तो सहज है, करेंगे? करना पड़ेगा। (बापदादा ने पीछे वालों से, माताओं से, टीचर्स से, डबल फारेनर्स सबसे पूछा, सभी ने हाथ हिलाया) हाथ तो सब बहुत अच्छा उठा लेते हैं।

**डबल फारेनर्स के तीन ग्रुप हैं ना?**

**(अन्तर्मुखी, मस्ताना, शक्ति ग्रुप)**

अच्छा, अन्तर्मुखी ग्रुप हाथ उठाओ। अन्तर्मुखी में थोड़े हैं। दूसरा ग्रुप है मस्ताना, अच्छा मस्ताना ग्रुप वाले खड़े हो जाओ। सदा मस्त रहने वाले ना! मस्ताना का अर्थ क्या हुआ? सदा मस्त रहने वाले ना! तीसरा ग्रुप - शक्ति। शक्ति ग्रुप शक्तिशाली है ना! नाम तो बहुत अच्छे रखे हैं। देखो शुरू-शुरू में जब भट्टी थी तो आपके गुप्स के नाम क्या थे? (डिवाइन युनिटी, मनोहर पार्टी, सुप्रीम पार्टी) नाम तो सुन्दर हैं ना? तो यह भी ग्रुप अच्छे बने हैं। नाम याद रहेगा तो नाम के साथ कर्तव्य भी याद रहेगा। अच्छा डबल फारेनर्स कुमार उठो। अच्छा, यह कुमारों का ग्रुप है। अच्छा किया है, बापदादा ने डबल फारेनर्स के रिफ्रेशमेंट का समाचार बहुत अच्छा सुना है। बापदादा दिल से मुबारक भी दे रहे हैं लेकिन सभी गुप्स को जो आज अण्डरलाइन किया है, वह याद भी दिला रहे हैं।

डबल फारेन की टीचर्स बहुत हैं। टीचर बनना बहुत-बहुत श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है क्योंकि बापदादा टीचर्स को गुरु-भाई के रूप में देखते हैं, इतना समान रूप में देखते हैं क्योंकि बाप के आसन पर बैठते हैं, टीचर्स को यह हक मिलता है। जैसे गुरु की गद्दी होती है ना तो यह मुरली का तख्त, मुरली धारण कराना और मुरली सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन मुरली धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरुभाई का तख्त दिया है और फारेन में तो देखा जाता है कि बहुत जल्दी से जल्दी तख्तनशीन हो जाते हैं। बापदादा खुश होते हैं, जिम्मेवारी का ताज धारण कर लेना, हिम्मत रखना, यह भी

कोई कम बात नहीं है लेकिन गुरुभाई अर्थात् बाप समान। वैसे तो सभी को बाप समान बनना ही है लेकिन फिर भी टीचर्स को विशेष जिम्मेवारी का ताज है। बापदादा को भी टीचर्स का संगठन बहुत अच्छा लगता है। लेकिन आज का विशेष शब्द “निरन्तर अटेन्शन”।

अच्छा - भारत की टीचर्स उठो, भारत की टीचर्स भी कम नहीं हैं। तो सुना, टीचर्स को बाबा किस नज़र से देखते हैं। यह क्लास की, मुरली सुनाने की सीट... बहुत भाग्यवान हैं। बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो क्योंकि साकार रूप में निमित्त कौन हैं? अच्छा दादियां तो एक फारेन रहती है एक मधुबन रहती है लेकिन हर स्थान पर साकार रूप में निमित्त टीचर्स हैं या निमित्त पाण्डव भी हैं। ऐसे नहीं सिर्फ टीचर्स (बहनें) हैं, पाण्डव भी हैं, जिसको बड़े भाई कहते हो ना। पाण्डव तो ज़रूरी हैं ही। शक्तियां और पाण्डव दोनों के साथ से ही आदि से कार्य चला है, चाहे थोड़े पाण्डव थे लेकिन विश्वकिशोर तो थे ना। आनंदकिशोर, विश्वकिशोर शुरू के हैं। तो पाण्डवों का साथ तो है ना। लेकिन मैजारिटी टीचर्स ज़्यादा हैं जो निमित्त बन जाती हैं। आप बैकबोन हो, टीचर्स के भी बैकबोन हो। हर एक का पार्ट है। लेकिन विदेश में यह विशेषता है कि पाण्डव भी टीचर बनते हैं, भारत में कम बनते हैं। तो टीचर्स को सदा बापदादा कहते हैं टीचर अर्थात् अपने फीचर्स द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाली। फीचर्स द्वारा फ्यूचर स्पष्ट दिखाने वाली। तो ऐसी टीचर्स हो ना? जो आपको देख बापदादा के पालना की अनुभूति हो। परमात्म-गुण, परमात्म-शक्तियां आपके चेहरे से दिखाई दें, बोल से दिखाई दें। ऐसे नहीं फलानी टीचर ने बोला, नहीं। बापदादा ने टीचर्स के फीचर्स द्वारा अनुभव कराया। बाप से हर एक का कनेक्शन जोड़ना - यही है टीचर्स का कर्तव्य। हर एक के दिल से हर समय बाबा निकले।

यह गुप्स भी अच्छे बनाये हैं क्योंकि पर्सनल रिफ्रेशमेंट मिलने से अनुभूति अच्छी करते हैं। गुप्स में रिज़ल्ट अच्छी निकली ना! अच्छा है।

**सेवा का चांस यू.पी. का है:-** अच्छा, गोल्डन चांसलर उठो। पाण्डव

भी हैं, शक्तियां भी हैं, तो आप सबको इस सेवा का टाइटल मिला है, गोल्डन चांसलर। तो अभी यू.पी. कमाल करके दिखायेगी ना! धूम मचाओ यू.पी. में। यू.पी. में पुराने-पुराने भी अच्छे हैं, नये भी काफी आये हैं। अभी ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो देश-विदेश के ब्राह्मणों की नज़र यू.पी. की तरफ हो जाये। यू.पी. में निशानी है - जो ब्रह्मा बाप ने भी देखी। ब्रह्मा ने बीज डाला था, उस स्थान में साकार रूप में कोशिश की थी, जमीन लेके कुछ बनाने की, लेकिन अभी तक बना नहीं है। कमाल करो, बन जायेगा। (बनारस वाले म्यूजियम बना रहे हैं, आगरा वाले भी बना रहे हैं।) देखेंगे, कितने वारिस निकलते हैं और कितने सहयोगी निकलते हैं, कितने रेग्युलर स्टूडेंट निकलते हैं! रिज़ल्ट देखेंगे। बाकी अच्छा है, हिम्मत अच्छी रखी है, मदद मिलती रहेगी। तो यू.पी. वाले क्या कमाल करेंगे? कमाल करना है या नहीं? करना है ना, तो देखेंगे यू.पी. वाले क्या कमाल करते हैं। सब कहेंगे यू.पी. में चलो, यू.पी. में चलो। वह विनाशकारी विनाश करें, स्थापना वाले स्थापना। तो देखेंगे, प्लैन बनाना। ठीक है ना! प्लैन बनेगा ना।

**मीडिया वालों की मीटिंग है** – मीडिया वाले क्या कर रहे हैं? मीडिया का अर्थ ही है हर बात को प्रत्यक्ष करने वाले। तो मीडिया वालों ने क्या प्रत्यक्षता का प्लैन बनाया? इस साल प्रत्यक्षता हो जायेगी? मीडिया वाले चैनल बनाओ या कुछ भी बनाओ लेकिन यह आना चाहिए कि यही है, यही है, यही है...। अभी तक तो यह भी है, यही है, नहीं आया है। यह भी अच्छे हैं..., अच्छे-ते-अच्छे यही हैं, वह अखबार में निकले। चैनल में आवे तब बाप कहेंगे मीडिया है। फिर भी बढ़ तो रहा है, जितना भी किया है, वृद्धि तो हुई है लेकिन लक्ष्य तो वह है ना? मेहनत अच्छी कर रहे हैं, नाम तो हो गया है लेकिन अभी काम नहीं हुआ है। हो जायेगा, ज़रूर। अच्छा।

**सिन्धी ग्रुप बहुत बड़ा आया है** – बहुत अच्छा किया। अपने घर में आये हो ना? समझते हो अपने घर में आये हैं कि ब्रह्माकुमारियों के पास आये हैं? अपना घर है क्योंकि सिन्ध से स्थापना हुई, तो स्थापना के निमित्त बने हुए

स्थान से आपका सम्बन्ध है। इसलिए आये हैं तो बहुत अच्छा, आये हैं और आते रहना। अपने सम्बन्ध-सम्पर्क वालों को जगाते रहना। बापदादा ने देखा है सेवा अच्छी करते हैं, अब तक की भी है। एक दो को परिचय देते रहते हो लेकिन और सेवा को बढ़ाओ। अभी इतने आये हैं ना, फिर दूसरी बारी और ज्यादा आना। सिन्धी लोगों को देख करके सबको खुशी होती है - यह सिन्ध वाले हैं जहाँ स्थापना हुई थी, आपको देखकर खुश होते हैं। तो अच्छा किया है। वृद्धि हो रही है ना? अच्छी वृद्धि है। बहुत अच्छा किया।

अच्छा, डबल फारेनर्स को मुबारक तो मिली। (३४० देशों से १०००० डबल विदेशी आये हैं) डबल विदेशियों ने विश्व कल्याण करने की जो हिम्मत रखी है, उसकी बापदादा विशेष डबल विदेशी बच्चों को बधाई देते हैं। कोई भी कोना छोड़ने वाले नहीं हैं। हिम्मत रख सेवा में बढ़ते ही रहते हैं। बापदादा ने देखा सेवा की रिज़ल्ट में जो काल आफ टाइम, लिविंग वैल्यू, पीस आफ माइन्ड... जो भी करते हो वह अच्छा कर रहे हैं। अच्छा है। रिज़ल्ट भी अच्छी है और आगे बढ़ भी रहे हैं। भारत को तो वरदान है गांव-गांव में झण्डा लहराना। भारत में मुश्किल नहीं है लेकिन डबल फारेनर्स हर देश में साथ-चाद (परिस्थितियां) न देख करके भी स्थापना करने का तरीका बहुत अच्छा है। भारत तो है ही बाप का, इसलिए उसको तो वरदान है ही।

**टर्की से बहुत अच्छा ग्रुप आया है** - अच्छा, टर्की वाले उठो - देखो, आपके लिए बाप को बहुत-बहुत प्यार है, तब तो टर्की में पहुँच गया ना! अच्छे मस्त हैं। गुप्त और मस्त। गुप्त भी रहना है और अपनी मस्ती में भी रहना है। तो अच्छा पार्ट बजा रहे हो। अच्छा। डबल विदेश की टीचर्स ने मेहनत अच्छी की है। आर.सी.ओ. ग्रुप उठो। डबल फारेन में आर.सी.ओ. कौन हैं, आप सबको पता तो होना चाहिए। टाइम भी दिया है और मेहनत भी अच्छी की है, मुबारक हो। बहुत अच्छा किया है। बैकबोन तो है। (दादी जानकी) आप भी उठो, देखो आपके लिए सबका प्यार है ना, इसलिए तालियां बजाईं। अच्छा है। (एन.सी.ओ. भी है) अच्छा है जो भी हैं वह सब



अच्छे हो। एन.सी.ओ, आर.सी.ओ जो भी हैं। समय दिया है। समय देने से सफलता होती है। अच्छा।

गुजरात का क्या हाल है? अच्छी हिम्मत है ना? डर तो नहीं है ना? शक्तियों को क्या डर है। यह तो होना ही है। लेकिन रीयल रुका हुआ है, यह तो रिहर्सल है। घबराते तो नहीं हो ना! कोई घबराता है? नहीं। आराम से ड्रामा की हर सीन देखते चलो। सिर्फ साक्षीपन की सीट से नीचे आकर नहीं देखो। सीट पर अच्छी रीति से सेट होकर बैठो।

**मधुबन वालों से:-** अच्छा, मधुबन वाले ठीक हैं? बहुत सेवा की सीजन चल रही है। मधुबन वाले उठो। मधुबन वाले सबसे प्यार-ते-प्यारे हैं क्योंकि जो चुल पर होता है वह दिल पर होता है। बापदादा मधुबन निवासी बच्चों को सदा ही इमर्ज कर याद-प्यार देते हैं क्योंकि इतनी आत्माओं को बाप से मिलने का सुख देते हैं। सेवा करना अर्थात् बाप समान सुखदाई बन सुख देना। मधुबन को सेवा करने का बहुत-बहुत-बहुत परमात्म चांस है। मधुबन वालों के ऊपर परमात्मा की मेहर है, गुरुकृपा है। तो सदा चाहे ऊपर सुन रहे हैं, चाहे सम्मुख हैं लेकिन बापदादा सभी मधुबन निवासी सेवाधारी सो बाप के दिल पर, तख्त पर बैठने वाले बच्चों को बहुत-बहुत सेवा के रिटर्न में वरदान दे रहे हैं - अथक भव। सदा अथक भव का अपना चित्र सबको दिखाने वाले। ऐसे हो ना! सुखदाई हो ना? कितनी दुआयें मिलती हैं। जो सच्ची दिल वाला है उसको दुआयें स्वतः ही मिलती हैं। मधुबन वालों को दुआयें जमा करने का चांस बहुत अच्छा है। जितनी चाहे उतनी करो। तो दुआओं का स्टाक इक्लू हो रहा है ना? मधुबन निवासियों से बापदादा का स्पेशल प्यार है। अलग मिलते नहीं हैं लेकिन दिल से सदा मिलते रहते हैं। बहुत अच्छा। बहनें भी हैं। अच्छा।

**ग्लोबल हॉस्पिटल के ट्रस्टी भी आये हैं -** ग्लोबल हॉस्पिटल से सबसे ज्यादा फायदा, बापदादा ने देखा ब्राह्मणों को बहुत है। ब्राह्मणों के लिए सहज साधन बन गया। इसलिए बापदादा हॉस्पिटल वालों को भी खास याद दे रहे

हैं। अच्छा - ट्रस्टी उठो। अच्छा है बापदादा एक हंसी की बात सुनाते हैं। कामन बात है लेकिन हंसने की है, सभी से ज्यादा हॉस्पिटल का फायदा बापदादा ने देखा मधुबन वालों को है, क्यों? कोई भी शरीर छोड़ता है ना, तो मधुबन वालों का नाश्ता बंद नहीं होता है और यहाँ तो हर सीजन में दो-चार तो होते ही हैं। फायदा है ना मधुबन वालों को, खाना तो बंद नहीं होता है ना! और बच्चों को भी फायदा है। लेकिन सोशल वर्क के हिसाब से भी आबू निवासियों की वृत्ति चेंज होना, इसके निमित्त हॉस्पिटल है। हॉस्पिटल के सेवाधारी आये हैं, उठो। बहुत-बहुत सेवा की मुबारक हो। अच्छी सेवा करते हैं और दिनप्रतिदिन अनुभवी भी बनते जाते हैं। फिर भी हिम्मत तो रखी है ना? अच्छा, अभी तो बाम्बे में भी हॉस्पिटल खुल रही है। अच्छा है देखो ग्लोबल हॉस्पिटल को अच्छा-सा वारिस मिल गया है। (भुवनेश्वर में भी एक हॉस्पिटल खुली है) सभी को अच्छा लगता है? हाथ तो हिलाओ। टीचर्स को चेक कराना सहज हो गया है ना! अच्छा है। देश-विदेश में यह नाम भी बहुत सेवा करता है। विदेश में जानकी फाउण्डेशन है, अच्छा है, यह भी सेवा का साधन है और एक-दो में कनेक्शन जो रखा है वह भी अच्छा है। ट्रस्टी भी अच्छे-अच्छे हैं। अच्छा।

चारों ओर के जन्म उत्सव मनाने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को, सदा अलौकिक जन्म के अलौकिक दिव्य कर्तव्य करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे एकनामी और सर्व खज़ानों के एकानामी के अवतार बच्चों को सदा हर वरदान और वर्से को जीवन द्वारा प्रत्यक्ष करने वाले उमंग-उत्साह में रहने वाले बच्चों को, बापदादा का अलौकिक जन्म के मुबारक सहित याद-प्यार और नमस्ते।

## दादियों से

दादी जी ने बापदादा को बर्थ डे की बहुत-बहुत बधाई दी।

आज माला में आप सब आये। माला याद की ना! आदि की स्थापना

के रत्न, तो उसमें आप माला के मणके थे। अच्छा है स्थापना में भी निमित्त बने, पालना में भी निमित्त बने, अभी बाप के साथ चलने में भी निमित्त बनेंगे। क्या दरवाजा बापदादा अकेला खोलेगा? (नहीं) आपके लिए रुके हुए हैं। आओ तो दरवाजा खोलें। लेकिन सेवा पूरी करनी पड़ेगी ना क्योंकि साकार में आप लोगों को निमित्त बनाया है। तो साकार का कार्य तो पूरा करना पड़ेगा ना। आजकल सब किसको देखते हैं? सबकी नजर कहाँ जाती है? आप लोगों के ऊपर ही तो जाती है। जो निमित्त बने हुए हैं, उन्हों के ऊपर ही सबकी नज़र जाती है। नज़रों में तो सभी को बिठाया क्योंकि बाप की नज़र कोई छोटी तो है ही नहीं, बेहद की नज़र है। तो सभी नज़र में हैं। सभी नूरे रत्न हैं। बहुत अच्छा। हर एक अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं और बजाना ही है। ड्रामा में बंधे हुए हो। मजा आता है ना! बहुत अच्छा है!

### बापदादा ने अपने हस्तों से शिव ध्वज फहराया, केक काटी और सब बच्चों को बधाइयाँ दी

सभी बच्चों के दिल में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है और आप सब बच्चों के दिल में लहराया हुआ झण्डा दुनिया में लहराया जायेगा। सभी के मुख से यही निकलेगा - वाह शिव-शक्ति पाण्डव सेना वाह! बापदादा को सभी के खुशनुमा: चेहरे देख बहुत-बहुत खुशी है। खुशनुमा हो और सदा खुशनुम: चेहरा है और औरों को भी सदा दिलखुश मिठाई खिलाते रहना। अमृतवेले यह मिठाई सभी याद से खा लो। तो सारा दिन इस मिठाई की शक्ति रहेगी, खुशी रहेगी। अच्छा। सबको मुबारक हो। (सबके तरफ से बाबा को मुबारक हो, मुबारक हो) ओम् शान्ति।

